BY: Dr. Suchitra Devi
Associate professor
N. A. S college

M. Ed 4 semester
Unit 4

ORGANIZATIONAL COMPLIANCE

सामान्यत। अनुपालन का तात्पर्य किन्हीं नियमों, योजनाओ ,नीतियों, मापदंडों या विधियों को लागू करने से है ।

किसी संगठन के उद्देश्य व लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो योजना, नीति या मापदंड निर्धारित किये गये हैं उन्हें लागू करने के लिये यह सुनिश्चित करना होता है कि क्या संगठन अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन योजनाओ तकनीकी, नीतियों का पालन किया गया या नहीं।

वर्तमान में संगठन अपने अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह सुनिश्चित करती है कि उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जिन ढंगो ,नियमों व तकनीक को अपनाया जाना चाहिए क्या उन्हें अपनाया गया या नहीं। यह तकनीक यह सुनिश्चित करने के लिए भी अपनायी जाती है कि क्या संगठन अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक तकनीकी नियमों का पालन कर लिया गया है या नहीं? शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र मे इस तकनीक से यह सुनिश्चित किया जाता है कि क्या उन ढंगो को अपना लिया गया है जो प्रशिक्षण के अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है अथवा नहीं? उदाहरण के लिए;

शिक्षण-प्रशिक्षण को प्राप्त करने के लिए :-

1.Micro Teaching
2.class Room teaching
3.Teaching Aids
4.Lesson plans

उपरोक्त वे कार्य व क्रियाकलाप है जिन्हें Organisational compliance के माध्यम से ही सुनिश्चित किया जा ता है कि क्या उन सभी सोपानों से गुजर कर अन्तिम लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है?

संगठनात्मक अनुपालन Organisational compliance शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में वह उपकरण है जो विद्यालय महाविद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण माध्यम शिक्षा पाठ्यक्रमों, अध्यापकों की शिक्षण पद्धति।, छात्रों की अनिवार्य उपस्थि ति तथा अन्य शिक्षण नीतियों को लागू करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय का भी यह दायित्व है कि वह यह सुनिश्चित व अनुप्राणित करे कि क्या महाविद्यालय निर्धारित मापदंडों का अनुपालन कर रहे हैं। उक्त सभी पर्यवेक्षण केवल संगठनात्मक अनुपालन तकनीक के द्वारा ही सुनिश्चित किया जा सकता है यह एक ऐसी तकनीक है जो शिक्षण संस्थानों की Monitoring के लिये प्रयोग किया जाता है। यह पर्यवेक्षण का ऐसा ढंग है जिससे शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक परिवर्तन व विकास सम्भव है। Organisational compliance तकनीक को यदि प्रयोग न किया जाए तो शिक्षण संस्थानों का गुणात्मक सुधार व विकास सम्भव नहीं हो सकेगा।

इसके निम्न प्रतिकूल प्रभाव हो सकते है, प्रत्यक्ष प्रतिकूल प्रभाव:-

1.छात्रों की योग्यता में कमी
2.शिक्षा की गुणवत्ता में कमी